

Panch Tattwa - The Subtle Elements

Date : 16th December 1998
Place : Delhi
Type : Seminar & Meeting
Speech : Hindi & English
Language

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 07
English	13 - 15
Marathi	-

II Translation

English	-
Hindi	08 - 12
Marathi	16 - 19

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

इतने ठंड में और तकलीफ में आप सब लोग आए। एक माँ के हृदय के लिए ये बहुत बड़ी चीज है। अब और कोई दिन मिल नहीं रहा था, इसी दिन आप लोगों को तकलीफ उठानी पड़ी। और आप लोग इतने प्रेम से, सब लोग, यहाँ आए। सबका कहना था कि हवाई अड्डे पर माँ हम तो बिल्कुल आपको देख भी नहीं पाए, और मैं भी आपको नहीं देख पाई। इसलिए बेहतर है कि आप लोग आज यहाँ आए हैं, सब लोग। और दिल्ली वालों का जो उत्साह है, वो कमाल का है। ऐसा ही उत्साह सब जगह हो तो ये भारतवर्ष सहजयोग का महाद्वार बन जाएगा। ये एक समय है, ऐसा कहना चाहिए, जिसे घोर कलयुग कहते हैं। इस घोर कलयुग की एक विशेषता ये है कि मनुष्य बहुत जल्दी भ्रांति में आ जाता है। उसको जरा सा भी विवेक नहीं रह जाता और इस भ्रांति के चक्कर में वो न जाने कहाँ-कहाँ भटकता रहता है। आज कल आप देख रहे हैं कि लोग कैसे-कैसे गलत लोगों के पीछे भाग रहे हैं और गलत-गलत धारणाएं अपना करके अपना जीवन बरबाद कर रहे हैं। ये समझना चाहिए कि ये घोर कलयुग है।

इस कलयुग की विशेषता ये है कि मनुष्य धर्म का पथ छोड़ करके अधर्म की ओर आसानी से चला जाता है। उसमें उसे कोई हिचक नहीं होती। वो परेशान नहीं होता और वो वैसे कर्म करते ही रहता है। उसमें एक तरह की उद्दामता आ जाती है जिसे अपने अंदर लेकर वो समझता है कि वो बड़ा सत्कर्म कर रहा है।

इतना भयंकर दावानल जैसे चारों तरफ से लगा हुआ दिखाई देता है। उसके बीच आप सहजयोगी खड़े हुए हैं। इस कलयुग के बारे में अनेक वर्णन शास्त्रों में है। पर उसमें ये कहा जाता है कि नल, जो दमर्योति के पति थे, के हाथ एक दिन कलि लग गया। तो उन्होंने कहा कि अब मैं तेरा सर्वनाश करता हूँ, क्योंकि तुमने मेरी पत्नी से मेरा बिछोह किया है। इस पर कलि ने कहा कि तुम मेरा महात्म्य जानो, मेरा जो महात्म्य है उसे समझ लो। उस महात्म्य में गर तुम समझो कि मुझे मार डालना है तो मार डालो, मैं खत्म हो जाऊंगा। उसने कहा तुम्हारा क्या महात्म्य है? तो उन्होंने ये कहा कि इसी कलियुग में जब लोग कलि की भ्रांति के चक्कर में आ जाएंगे, उसी वक्त ये बड़ा कार्य होने वाला है- 'आत्मसाक्षात्कार'।

आत्मसाक्षात्कार पाना ही जीवन का लक्ष्य है। भारतवर्ष में तो यही जीवन का लक्ष्य माना गया है कि आप पहले आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त हों, उसके अलावा और जीवन का कोई भी अर्थ नहीं माना जाता। यही एक लक्ष्य है। यही एक परम पाने की चीज है और ये आत्मसाक्षात्कार कलयुग में आपने प्राप्त किया है। आपने इसे पाया, ये बहुत बड़ी चीज है। इसको पाने के बाद अब आपने उसकी महत्ता भी समझी। उसकी आप गहराई में भी उतरे और उस गहराई में उतर के आप देख रहे हैं कि इसी से आपको शांति की प्राप्ति होगी और आपको आनन्द की प्राप्ति होगी। बहुतों को हो भी गई, बहुतों को

मिल भी गयी है, और भी इसमें सूक्ष्मता आने लगी है। ये सूक्ष्मता समझने की बात है। इस सूक्ष्मता को आप समझेंगे तो आप जान जाएंगे कि आप किधर अग्रसर हो रहे हैं, किधर आप बढ़ रहे हैं, कौन सी आपकी दशा है। अगर अभी भी आप सूक्ष्म नहीं हो रहे हैं तो सोचना चाहिए कि आपमें कुछ कमी है और उस कमी को ठीक करना चाहिए। इस सूक्ष्मता की बात करते वक्त शास्त्रों से ही इसका बड़ा आधार मिलता है। ये देश अपना जो है यह अत्यंत गहन विचारों से भरा हुआ और अत्यंत महान् सत्त्वों से भरा हुआ है। इसमें जो लिखा गया है; वो अद्वितीय है, उसके जैसी चीज़ दूसरी संसार में लिखी नहीं गई। यहाँ से लेकर के तो और लोग कुछ ज्ञान लेकर चले जाएं, लेकिन इसकी गहराई में आप ही लोग उतर सकते हैं। लेकिन हम जानते ही नहीं कि हमारे देश में कितना महान व पवित्र ऐसा वाङ्मय हो गया। कितनी बढ़िया-बढ़िया चीज़ें हमारे यहाँ प्राचीन काल में लिखी गईं और उस पर विवरण किया गया, बताया गया कि क्या चीज़ है 'आत्मासाक्षात्कार' और उससे आप क्या-क्या प्राप्त कर सकते हैं। हालांकि हमने आपको बहुत चीज़ें खोल-खाल कर बता दीं, समझा दीं लेकिन उसकी अनुभूति हुए बगैर उसको महसूस किए बगैर आप किसी भी तरह से संतुष्ट नहीं हो सकते। उसकी अनुभूति होनी चाहिए। वो अनुभूति क्या है? ये समझने की जरूरत है।

सबसे पहले तो समझना चाहिए कि हम पाँच तत्वों से बने हुए हैं। ये पाँच तत्व हमारे अंदर सारी क्रियाएं करते हैं। सब उसी से हमारी घटना हुई है। उसी से हम एक मनुष्य जीव बने। सारे जानवरों में हर एक में ये होते हैं पर विशेष रूप से इंसान में इसका प्रारंभिक इतना तरह से होता है कि कुण्डलिनी जो है, वो सिर्फ मनुष्य में मानव में ही स्थित होती है और मानव में ही

वो कार्यान्वित होती है क्योंकि अब आप अपनी चरम स्थिति में आ गए। इसके बाद आपका जो भी कार्य है वो उत्थान का कार्य है और उस उत्थान के कार्य में अब आपको आत्म साक्षात्कार प्राप्त करना है। उसके लिए कुण्डलिनी आप सबके अंदर स्थित है। अब ये मैं बता रही हूँ, लेकिन ये बातें हमारे यहाँ बहुत पुरानी लिखी हुई हैं कि हमारे अंदर कुण्डलिनी की शक्ति है। उसके बाद अनेक लोगों ने इस पर काफी वर्णन किया हुआ है-जैसे बारहवीं शताब्दी में मैंने बताया था कि ज्ञानेश्वर जी ने वर्णन किया और सोलहवीं शताब्दी में इतने लोग हुए गुरु नानक जैसे इतने महान कहना चाहिए कि विद्वान उन्होंने तक कुण्डलिनी पर बहुत कुछ लिखा। कबीर ने लिखा, तुकाराम ने लिखा, नामदेव ने लिखा। सब लोगों ने लिखा है ये शक्ति हमारे अंदर है, इसे जागृत करना चाहिए। ये बात समझने की है कि ये हमारे ही देश के लोगों ने इतना क्यों लिखा? क्योंकि हम जो ये इस देश के देशवासी हैं ये कोई तो विशेष लोग हैं। ये धर्म में पले हुए लोग हैं। इनके अंदर धार्मिकता है। सदियों से धर्म हमारे अंदर बसा हुआ है। और धर्म ऐसा है कि हम समझते हैं ये अधर्म है। ये करना गलत बात है। और देशों में मैं देखती हूँ कि वो धर्म, अधर्म के अंदर कोई भी अंतर नहीं पाते। अगर कोई अधर्म करना हो तो सोचते हैं ये तो बड़ी भारी हमारे लिए एक Challenge है एक आह्वान है, उस आह्वान के लिए ये हम यह कर रहे हैं। अगर उनको Drug लेना है तो कहते हैं कि इसमें डरने की कौन सी बात है, ये तो हमारे लिए आह्वान है। कुछ भी गलत काम करना है उसको हम कहते हैं ये हमारे लिए आह्वान है और गलत काम करना वहाँ समझा जाता है कि बड़ी भारी उच्चतर स्थिति मनुष्य की है जहाँ वो बड़ा भारी, एक कहना चाहिए, कि योद्धा प्रमाणित होता है। अब इस चीज़ को समझना चाहिए कि

हमारी बुद्धि में और उनकी बुद्धि में मूलतः ये फर्क है। मूल में ही हममें फर्क है और मूल में ही हम जानते हैं कि धर्म और अधर्म क्या है? वो कोई माने या न माने। पढ़े हो, लिखे हो या देहात के हो, शहर के हों, सब भारतीय जानते हैं कि धर्म क्या है और अधर्म क्या है। निश्चित रूप से जानते हैं तो भी अधर्म करते हैं, तो भी अधर्म में फँसते हैं, तो भी ये चीजें करते हैं और उससे सोचते हैं कि हाँ हमने किया लेकिन गलत किया तो क्या करें? पर जो बाहर के लोग हैं उसको गलत नहीं समझते, इतनी उन लोगों की धारणाएँ ही नहीं बनी हुई। मूलतः उनके अंदर ये विचार ही नहीं आया कि कोई चीज पाप और पुण्य है। पाप और पुण्य की जो कल्पना है वो सिर्फ भारतीयों को मिली हुई है और इसलिए आप लोग एक विशेष रूप के नागरिक हैं जिनके लिए ये उपलब्ध है, ये मिला हुआ है। ये ज्ञान मिला हुआ है कि धर्म क्या है। छोटी-छोटी बातों में भी हम लोग बहुत कुछ जानते हैं जो ये लोग नहीं जानते। इनको मालूमात नहीं लेकिन इनकी खोज में गहराई है। हमारी खोज में गहराई कम। हम लोग ये सोचते हैं कि भई हम तो ये करते ही आए हैं। ऐसा-ऐसा तो हमने किया ही है, तो इसमें कौन सी विशेषता है? लेकिन इन लोगों ने क्योंकि अंधेरा देखा है इसलिए प्रकाश का महत्व बहुत जानते हैं। वही बात हमारे अंदर, मैं सोचती हूँ, कुछ कम है और इस वजह से हिन्दुस्तानी सहजयोग में आकर के गहरे उतरना कठिन समझते हैं। गहरे उतर नहीं पाते, आप सबसे मुझे ये कहना है कि सहजयोग में एक बार आपका बीज मानो, जैसे प्रस्फुटित हुआ पर इसे एक विशाल पेड़ बनना है। इस विशाल पेड़ बनने के लिए ध्यान-धारणा आदि करना है और सहजयोग को फैलाना है। आप अगर सहजयोग को फैलाएंगे नहीं तो फिर आपका प्रसार नहीं हो सकता। आप बढ़ नहीं सकते। आप अंदर गहरे

उतर नहीं सकते। इसलिए सहजयोग को फैलाना चाहिए। कम से कम हर आदमी चाहे तो एक हजार आदमी को आत्मसाक्षात्कार आसानी से दे सकता है। तो इस मामले में शर्माने की कोई जरूरत नहीं है, इस मामले में हिचकने की कोई जरूरत नहीं। इस मामले में खुले आम बातचीत करने की जरूरत है क्योंकि आप भारतीय हैं। बार-बार मैं कहूँगी कि भारतीयता जो है वो एक विशेष अनुपम हमारे पास वस्तु है और इसीलिए कहा जाता है कि हजारों पुण्य करने के बाद आप भारतवर्ष में जन्मे। लेकिन इस धर्म में, जो भी धर्म हम मानते हैं, इसको मैं हिन्दू-मुसलमान या क्रिश्चन नहीं कहूँगी, पर धर्म माने अच्छाई की ओर जो हमारा रुझान है, हम अच्छाई को पसंद करते हैं, ये जो रुझान हमारे अंदर है वो जो रुझान है उसका कारण ये है कि हमारे देश में अनेक-अनेक ऋषि-मुनि हो गए और उन्होंने बहुत-कुछ लिख दिया, बहुत-कुछ बताया कि जीवन में क्या चीज करने से पवित्रता रहती है। पवित्रता की ओर हमारे अंदर बहुत चिंतन हुआ है और इस पवित्रता की ओर कोई जबरदस्ती से नहीं संपूर्ण आपको स्वतंत्रता है। इस स्वतंत्रता में ही हम बहक गए। ये जो स्वतंत्रता हमें मिली उसी से हमने रास्ते दूसरे ले लिए। अब पूरी तरह स्वतंत्र हैं और ये स्वतंत्रता का मतलब होता है कि स्व का तंत्र। स्व का तंत्र जानना, स्व माने आत्मा उसका तंत्र जानना ये स्वतंत्रता है। तो हिन्दी भाषा में कहिए आप संस्कृत में हर एक शब्द का अर्थ है। उसके व्याकरण की विशेषता यह है कि उसके जो कुछ भी वर्ण हैं या दूसरे जैसे क, ख, ग, घ वगैरा होते हैं, ये सब व्यंजन जिसे कहते हैं, ये सबमें अर्थ है। एक-एक चीज में अर्थ है निरर्थक कोई चीज नहीं। एक-एक अक्षर आप ले लीजिए तो इसमें बड़ा भारी व्याकरण हुआ है। अब ये सारी बात बताने का शायद अभी समय न हो पर मुझे ये कहना है

कि ये पाँच तत्वों को बताने वाले अपने अंदर पाँच तरह के व्यंजन बने हुए हैं। इसीलिए व्यंजन को वो शक्ति कहते हैं। और जब व्यंजन में शक्ति आ जाती है तो वो ही व्यंजन का अर्थ निकल आता है। अब छोटी-छोटी बातों में हम लोग समझते हैं कि कुछ भी नाम रख दो लड़के का, लड़की का कुछ भी नाम रख दो, नाम में क्या रखा है? तो ये इतनी गलत बात है कि नाम में क्या रखा है? नाम भी, लड़के का नाम जो है, वो भी सोचकर रखना चाहिए; क्योंकि एक-एक अक्षर में उसमें निहित है, छिपा हुआ है, एक बड़ा भारी मर्म। और वो मर्म है उसका 'अर्थ'। अर्थ और शब्द दोनों एक साथ रहते हैं और अर्थ जो है, वो शब्द की सेवा करता है। कोई भी आप शब्द कहिए तो उसके अर्थ में और शब्द में कोई अंतर, ऐसा हम लोग नहीं जानते हैं, पर अर्थ जो है, वो शब्द की सेवा करता है। हर एक चीज का अलग-अलग शब्द होता है। हर एक वर्णन में, हर एक चीज में हमारे यहाँ शब्द अलग-अलग होते हैं। ये भाषा की विशेषता ही नहीं है, ये भारतीय संस्कृति की विशेषता है। इसलिए इस संस्कृति से जो लोग उत्पन्न हुए हैं, इस संस्कृति में पढ़े हैं, और पढ़ रहे हैं, उनको जानना चाहिए कि हमारी संस्कृति है क्या? हम अपनी संस्कृति को जानते भी नहीं, कुछ समझ में भी नहीं आता कि सचमुच ऐसा क्यों करते हैं? पता नहीं हमारे बाप-दादे करते थे इसलिए हम करते हैं।

तो सबसे बड़ी चीज है कि अपनी संस्कृति को जानें और पहचानें कि क्या बात है? हम क्यों इस तरह से धार्मिक हैं? अपने आप ही हम लोग धार्मिक हो जाते हैं। उनको कुछ बताने की जरूरत नहीं है। कोई उनके ऊपर जबरदस्ती नहीं है कि 'तुम ऐसे ही करो कि वैसे ही करो। पर वो धार्मिक हैं। ये मानव की धार्मिकता कहाँ से आती है? क्यों आती है? उधर हमको ध्यान देना

चाहिए कि ये हम लोगों ने अपने-यहाँ ऋषि-मुनियों से बात सुनी। अब अंतर एक कि जो लोग, परदेसी जिनको हम कहते हैं, जो दूसरे देश के रहने वाले हैं, उनकी विचारधारा और हम लोगों की विचारधारा बिल्कुल अलग है। सोचने का, विचारने का भी जो तरीका है वो बिल्कुल अलग है। इतना अलग है कि आश्चर्य होता है। अगर विदेश में आप अगर कोई बात कहें, परदेस में आप कोई अगर बात कहें तो उसका पड़ताला लेने लग जाएंगे। उस पर साइंटिस्ट लगा देंगे। उसको देखेंगे ये है या नहीं? लेकिन उससे वो कहाँ तक पहुँच पाते हैं? अपने देश में तरीका और है, और वो ये है कि अगर कोई बात कही गई है तो उसका पड़ताला बनाने की जरूरत नहीं क्योंकि ये ऋषि मुनि जो बड़े पहुँचे हुए लोग थे, उन्होंने कही है। उसको स्वीकार्य करना चाहिए। जो जो बात उन्होंने बताई वो स्वीकार्य करना चाहिए, क्योंकि इतने पहुँचे हुए लोगों ने वो बात कही है। किसी ने जो भी बात कही उसको मान लेना चाहिए, क्योंकि उनसे ज्यादा अक्लमंद हम नहीं हैं। लेकिन परदेस में सब सोचते हैं, हम सबसे ज्यादा अक्लमंद हैं। वैसे अपने यहाँ नहीं है। अब इसका पड़ताला नहीं लेना चाहिए। पर कहा गया है कि अगर आपका आत्मसाक्षात्कार हो जाए और आप सम्पूर्ण आत्मसाक्षात्कारी हो जाएं, आपमें पूर्णता आ जाए, तब आप देख सकते हैं, प्रयोग करके कि जो ऋषि-मुनियों ने बात कही थी वो सच है या नहीं। अब सहजयोग में आप लोग यही करते हैं। हमने एक बात कह दी। आप मान जाते हैं कि माँ ने ये बात कही और उसको आप समझ लेते हैं कि माँ की कही हुई ये बात है। इसमें जरूर तथ्य है। उसमें आप ये नहीं सोचते कि माँ ने कहा, इसका पड़ताला करो। ये करो, वो करो। फिर आत्मसाक्षात्कार के बाद जब आप सम्पूर्णता में आ जाते हैं, जब आप उस दशा में पहुँच जाते हैं, तब आप खुद

ही इसका पड़ताला कर सकते हैं। जैसे हमने कहा है वो बातें हैं या नहीं। इसलिए अपने यहाँ गुरु का बड़ा भारी स्थान माना जाता है कि गुरु ने जो बात कही, उसको कभी भी शंका नहीं करनी चाहिए। पर आजकल के जैसे गुरु निकल आए वो देखने के बाद, मुझे समझ में नहीं आता है कि गुरु के लिए क्या कहा जाए! पर उसकी भी पहचान है। गुरुओं की पहचान है कि किसको असली गुरु मानना चाहिए और किसको नकली। जो आपको अनुभव दे वो ही असली गुरु। ये नहीं कि पैसा दे और ये डायमंड निकाल के दे। ये गुरु-बुरु नहीं हो सकते। ये तो तमाश-खोर हैं, या कहना चाहिए, ये अपनी दुकानें खोल रखी हैं। गुरु वही है जो आपको अनुभव दे। जब ये अनुभव आपमें प्राप्त होता है तो उसको स्वीकार्य करो। स्वीकार्य करके उसमें बढ़ो। उसमें पूर्णता आप लाओ, और फिर उसका पड़ताला आप देख लो। उसके उलट वहाँ पर, परदेस में, देखा मैंने कि किसी ने गर कोई बात कही कि ऐसी है तो पहले उसकी सिद्धता दो; पहले उसको साइंटिस्ट को दो। अब वो साइंटिस्ट पार है या नहीं है, उसमें इतनी क्षमता है या नहीं, वो समझ सकता है या नहीं, इसके लिए वो समर्थ है या नहीं, ये नहीं देखा जाता। किसी ने भी कुछ बात कह दी, उसके पीछे लग गए। फिर उसको दोहरा कर के दूसरा आदमी कहेगा कि नहीं-नहीं ये नहीं इसमें ऐसे है। तीसरा आदमी कहेगा कि नहीं नहीं ये जो है चीज़ इसमें ये गड़बड़ है। ऐसा है, वैसा है, क्योंकि अभी तक आत्म साक्षात्कारी वो लोग नहीं हैं, और उनमें वो सम्पूर्णता नहीं है। तो इस तरह का जब तक आपमें एक पूरी तरह से जीवंत अनुभव न आए। जब तक आप उस अनुभव से पूरी तरह से प्लावित न हों मतलब Nourish न हो, तो आप अधूरे हैं और अधूरे होने पर आपको कैसे समझ में आएगा कि ये सत्य है या झूठ है? ये बुद्धि

के जो चक्कर हैं, यही कम करने हैं। जब हमारे शास्त्रों में ये बात कही है। तो वो सत्य ही है। अब नानक साहब ने गुरु ग्रंथ साहब जब बनाया, वो सारे Realize souls पहुँचे हुए लोगों की कविताएं ले करके उससे बनाया। अब उसको पढ़े ही जा रहे हैं, पढ़े ही जा रहे हैं। ये भी बंकार बात है। उसमें क्या लिखा है वो समझने की कोशिश करो। उससे फिर वो आत्मसात होगा, हमारे अंदर बसेगा और हम उसी के सहारे उठ सकेंगे।

तो अब आपसे मैंने दो ही बात बताई सीधी-सीधी बात कि जो कुछ भी ऋषियों ने और गुरुओं ने बताया उसको प्रमाण मान लेना, क्योंकि आप अभी तक इतने प्रवीण नहीं हैं, आप इतने पहुँचे नहीं हैं। फिर उसके बाद दूसरी बात कि आप प्रवीण होने का प्रयत्न करें। उधर अग्रसर हों और प्रवीण हो जाएं। और प्रवीण होने पर, फिर आप पड़ताला इसका लें कि है कि नहीं। ये तो एक हिन्दुस्तानी के लिए हुआ। लेकिन मैंने ये देखा है कि परदेसी जो आपके भाई हैं ये तो बड़ी जल्दी पार भी होते हैं और ये गहरे उतर जाते हैं। क्योंकि इनके अंदर गहराई आ गई है। हमारे अंदर गहराई नहीं आई। हमारे गुरु ने ये कहा, हो गया काम खत्म। ये फ़लाने कह गए, काम खत्म। श्री राम ऐसे थे, काम खत्म। अरे भई उनके नज़दीक तुम कहीं गए कि नहीं, उनको समझा कि नहीं, उनको अपनाया कि नहीं? उसके अंदर से आपको क्या प्रेरणा मिली? बस भजन गा रहे हैं। चीख रहे हैं, चिल्ला रहे हैं। ये बड़े-बड़े संत-साधुओं ने, महाराष्ट्र में खास कर और यहाँ भी, ये कहा कि आप भजन गाते रहें। एक उन्होंने वहाँ वार्करी पंथ निकाला, हर जगह पंथ निकले। बेचारों को ये क्या मालूम था कि इन्सान इतना बेवकूफ है कि उसको कुछ दे दो तो बस वो ही करके बैठे रहेगा। वो तो संत साधु थे। उनको क्या मालूम

कि ये गहरा नहीं उतरेगा, इस पर विचार नहीं करेगा, इस तरफ अग्रसर नहीं होगा? तो बस उसी की एक चीज़ चल पड़ी। अब जिसने जो कुछ लिखा वो ही चीज़ चल पड़ी। अब जैसे महाराष्ट्र में मैंने बताया; वार्करी पंथ है। तो एक महीना वो लोग जाते हैं पैदल, बदन पर फटे कपड़े पहन कर। पता नहीं क्यों? ऐसा तो कहीं लिखा नहीं होगा। वहाँ महीना भर जागते हैं और वहाँ रहते हैं। पूरे समय वो, क्या कहते हैं आप लोग पता नहीं उसको, झाँझ, झाँझ बजाते-बजाते पहुँचते हैं। अब वहाँ पहुँच कर के एक महीना रहते हैं। उसके बाद वो सोचते हैं कि हमने तो भगवान को पा लिया। ऐसे थोड़े ही बताया था। उन्होंने तो ये बताया था कि इधर-उधर चित्त

जाने की जगह तुम परमात्मा का ध्यान करो। परमात्मा को याद करो। उनका नाम स्मरण करो। क्योंकि उससे तुम्हारा चित्त इधर-उधर नहीं जाएगा। देखिए उन्होंने जो बात कही थी, उसको वहीं तक सीमित रखा और इसी तरह से हमारे यहाँ के अनेक पंथ निकल चुके हैं। पर उससे किसी को कोई लाभ नहीं हुआ और पुश्तन-पुश्त वोही-वोही चीज़ें चल रही हैं। अब आप सहजयोगी हैं। आपने आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त किया, आप विशेष लोग हैं। ये समझ लीजिए। अब इसमें आपको और गहरा उतरना चाहिए। उस गहरे उतरने से आपके अंदर जो सूक्ष्मता जागृत होगी वो मैं अभी आपको समझाती हूँ। वो अब अंग्रेज़ी में मैं इन लोगों को बताऊंगी।

HINDI TRANSLATION

(English Talk)

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

भारतीय सहजयोगियों को मैं बता रही थी कि भारतीय ज्ञान की शैली पाश्चात्य ज्ञान से अत्यन्त भिन्न है। पश्चिम में आप यदि कुछ बताएं तो लोग इसकी परीक्षात्मक स्वीकृति माँगते हैं। वे वैज्ञानिकों या अन्य ज्ञानशील लोगों के पास जाते हैं और पूछते हैं कि इन पुस्तकों में जो लिखा है वो सत्य है या असत्य। ईसा मसीह को भी वे आँकते हैं, मोज़िज़ को भी वे आँकते हैं। वे सभी को आँकने का प्रयत्न करते हैं मानो वही सर्वाधिक विवेकशील एवं योग्य व्यक्ति हों। इन लोगों के विरुद्ध वे एक के बाद एक पुस्तक लिखते चले जाते हैं मानो उन्हीं लोगों ने अपने मस्तिष्क से कुछ कहा हो! प्रायः इसे कभी स्वीकार नहीं किया जाता और यदि स्वीकार कर

लिया जाए तो वे धर्मान्ध हो जाते हैं। परन्तु सूझ-बूझ की भारतीय शैली के अनुसार यदि किसी महान ऋषि मुनि या सन्त ने कुछ कहा है तो आपको उसकी बात सुननी होगी क्योंकि आप उतने बड़े सन्त नहीं हैं। जो भी कुछ उसने कहा है यह उसका अपना अनुभव है, अपना ज्ञान है। आपको उसे आँकने या असत्य कहने का कोई अधिकार नहीं। आप इसे स्वीकार करें और एक बार जब आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो जाएगा, तो ये स्पष्ट रूप से लिखा हुआ है कि, आत्मसाक्षात्कार के बाद आपको उन्नत होना होगा। पूर्णतः जब आप उन्नत हो जाएंगे तब आप स्वयं देख सकेंगे कि जो भी कुछ उन्होंने कहा है वह सत्य है, अतः वह सत्य है। अतः

मार्ग भिन्न है, एक मार्ग से यदि आप विज्ञान आदि के माध्यम से समझने का प्रयत्न करते हैं तो आप कहीं भी नहीं पहुँच पाते, इतना ही नहीं, आपकी उन्नति में बाधा पड़ती है। तो जो कुछ भी इन महान ऋषि मुनियों ने कहा है उस पर विश्वास करते हुए उस ज्ञान को समझें। जो भी कुछ ईसा मसीह, हज़रत मोहम्मद, ज्ञानदेव ने कहा है आपको उस पर विश्वास करना होगा। अभी तक आपका आध्यात्मिक स्तर उतना उच्च नहीं है। अतः आपको विश्वास करना होगा। इसे 'स्वीकार कर इसकी छानबीन करने का प्रयास न करें।' किसी भी चीज़ की छानबीन करते हुए आप उसमें खो जाते हैं। एक बार जब आप उस स्तर के आत्मसाक्षात्कारी बन जाएंगे तब पूर्णत्व की ऊँचाई तक आप उन्नत होंगे। केवल तभी आप ये समझ पाएंगे कि इन सन्तों की कही बातें सत्य हैं या असत्य और तभी आप छानबीन कर सकेंगे। तब सत्य, असत्य का भेद कर पाना बहुत सुगम हो जाएगा। सहजयोगियों के लिए ये पता लगाना अत्यन्त आसान होता है कि कोई चीज़ वास्तविक है या अवास्तविक, ये सत्य है या असत्य, प्रेम है या घृणा। चैतन्य लहरियों के माध्यम से आप यह भेद जान सकते हैं।

इससे आगे जाने के लिए, व्यक्ति के लिए जानना आवश्यक है कि ये चैतन्य लहरियाँ क्या हैं और किससे बनी हैं? इन चैतन्य लहरियों के पीछे कौन सी सूक्ष्म शक्ति है? इस शक्ति को हम परम-चैतन्य कहते हैं। परन्तु ये परम चैतन्य है क्या? परम चैतन्य प्राप्त करने के बाद आपमें क्या घटित होता है? यह बात, इस सूक्ष्मता को, समझ लेना आवश्यक है।

जैसा मैंने कहा, हम पाँच तत्वों से बने हैं, ठीक है? तो जब आपको जागृति प्राप्त होती है, जब कुण्डलिनी आपके सहस्रार पर पहुँचकर आपके ब्रह्मरन्ध्र का भेदन करती है तो आपकी एकाकारिता परमेश्वरी शक्ति (Divine Power)

से हो जाती है। यह परमेश्वरी शक्ति तब आपके माध्यम से बहने लगती है। तार जुड़ जाता है। जब ये शक्ति आपमें से बहने लगती है तो क्या होता है? इसकी सूक्ष्मता हमें समझनी चाहिए। सूक्ष्मता ये है कि जिन पंच तत्वों से हम बने हैं उन्हें ये चैतन्य लहरियाँ शनैः शनैः उनके सूक्ष्म तत्वों में जोड़ने लगती हैं। कहा गया है, बाइबल में भी कहा गया है, कि 'शब्द' ही परमात्मा है। परन्तु ये 'शब्द' है क्या? आप कह सकते हैं कि 'शब्द' मौन आदेश (Silent Commandment) है। हम इस प्रकार कह सकते हैं। परन्तु भारतीय दर्शन के अनुसार शब्द से बिन्दु की उत्पत्ति होती है, या हम कह सकते हैं कि शब्द नाद बन जाता है और फिर बिन्दु और इस बिन्दु से ये पाँचों-तत्व एक के बाद एक अभिव्यक्त होने लगते हैं।

प्रथम तत्व जो आता है वह है 'तेज'। प्रकाश अभिव्यक्त होने वाला प्रथम तत्व है। तो प्रकाश पहले तत्व का सार है। यह सब संस्कृत में लिखा हुआ है। परन्तु हमें समझना चाहिए कि सहजयोग में प्रकाश किस प्रकार प्रसारित होता है। आप सर्वत्र प्रकाश देखते हैं। तो प्रथम तत्व प्रकाश का सूक्ष्म तत्व है, ज्ञानोदीप्ति (ज्ञान का प्रकाश) हो जाना। परन्तु ज्ञानोदीप्ति का अन्य अर्थ भी है, हम इसे 'तेज' कह सकते हैं। उदाहरण के रूप में आत्मसाक्षात्कार प्राप्त होने के पश्चात् व्यक्ति का मुखमण्डल तेजोमय हो उठता है। तो हम कह सकते हैं कि प्रकाश का सूक्ष्म तत्व तेजस्विता है, यह तेजस्विता आपके मुखमण्डल पर दिखाई देने लगती है। तेजस्वी मुखमण्डल से लोग बहुत प्रभावित होते हैं और ऐसे आभावान व्यक्ति को विशेष सम्मान देने लगते हैं। आपने मेरे फोटो देखे हैं, बहुत बार आपको उनमें अथाह प्रकाश देखने को मिलता है। यह कुछ और न होकर मेरे अन्दर का प्रकाश है जो सूक्ष्म होकर दैदीप्यमान हो रहा है।

पंच तत्वों में से प्रकाश भी एक है। मुझमें जब प्रकाश सूक्ष्म हो जाता है तो यह तेजदायी हो जाता है तथा आपके अन्दर यह सूक्ष्म विकास घटित होता है। आपके मुखमण्डल भी तेजोमय हो उठते हैं। उन पर तेज होता है और आपकी त्वचा का रंग भी भिन्न हो जाता है। इस तेज को समझा जाना चाहिए। जिस स्थूल प्रकाश से हम बने हैं यह उसका सूक्ष्म तत्व (सार तत्व) है।

तत्पश्चात् प्रकाश तत्व से एक अन्य तत्व का उद्भव होता है, जिसे हम संस्कृत में 'वायु' कहते हैं अर्थात् हवा। इस स्थूल वायु का सूक्ष्म तत्व, आपको प्राप्त होने वाली, शीतल चैतन्य लहरियां हैं। शीतल चैतन्य लहरियां उसी वायु तत्व का सार हैं। हमें बनाने वाले पाँच मूल तत्वों में से वायु तत्व का सार ही शीतल चैतन्य लहरियां कहलाता है। जब आपका आध्यात्मिक विकास होता है तो ये सभी सूक्ष्म तत्व अपनी अभिव्यक्ति करने लगते हैं। आप केवल लहरियां ही नहीं प्राप्त करते, शीतलता का भी अनुभव करते हैं और यही वायु तत्व का सार है।

इसके पश्चात् जल तत्व है। जल भी हमें बनाने वाले तत्वों में से एक है। इसका सूक्ष्म तत्व क्या है? (कभी-कभी अंग्रेजी भाषा में अभिव्यक्ति के लिए शब्द नहीं होते) जल तत्व सूक्ष्म रूप में जब अभिव्यक्त होता है तो यह कठोर त्वचा को कोमल करता है। त्वचा कोमल हो जाती है। आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति का एक अन्य चिन्ह ये है कि उन्हें स्निग्धता लाने के लिए चेहरे पर किसी क्रीम का प्रयोग नहीं करना पड़ता। उनके अन्दर का जल तत्व ही उनके चेहरे की त्वचा को चमक और पोषण प्रदान करता है तथा उसे कोमल बनाता है। चेहरे की ये कोमलता प्रत्यक्ष दिखाई देती है। आत्मसाक्षात्कारी व्यक्तियों के मुख पर ये अभिव्यक्ति अत्यंत आवश्यक है। इसी के साथ-साथ आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति अत्यन्त विनम्र एवं मृदु हो जाता है।

किसी से जब वह बातचीत करता है तो उसकी आवाज में प्रेम होता है या यूँ कहें कि जल की शीतलता होती है। तो आपके अन्दर जिस अन्य सूक्ष्मता की अभिव्यक्ति होनी चाहिए—आपके आचरण में, आपकी त्वचा पर, दूसरों के प्रति आपके व्यवहार में—वह यह है कि आपको जल की तरह से होना चाहिए। जल की तरह से गतिशील, शीतलता, शांति एवं स्वच्छता प्रदायक होना चाहिए। आत्मसाक्षात्कारी होने के पश्चात् ये गुण आपके व्यक्तित्व का अंग-प्रत्यंग हो जाते हैं।

जल तत्व के पश्चात् अग्नि तत्व है। आपमें अग्नि भी है परन्तु यह अत्यन्त शांत अग्नि है। यह किसी अन्य को नहीं जलाती, आपके अन्दर की बुराइयों को जलाती है। न केवल आपके अन्दर की बुराइयों को, आपके माध्यम से अन्य लोगों की बुराइयों को भी आपकी ये अग्नि जला देती है। मान लो कोई अत्यन्त क्रोध से मेरी ओर आता है तो मेरे अन्दर की अग्नि से उसका क्रोध शांत हो जाता है। इतना ही नहीं गहन आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति को अग्नि जला नहीं सकती। अग्नि की जलन उस तक नहीं आ सकती यह बात समझ लेना बहुत आवश्यक है। आप यदि कोई गलत कार्य कर रहे हैं तो अग्नि आपको जला सकती है। परन्तु यदि आप अच्छी सहजयोगी हैं पूर्णतः विकसित सहजयोगी हैं तो अग्नि आपको कभी जलाएगी नहीं। हमारे सम्मुख सीताजी का उदाहरण है जो अग्नि में प्रवेश कर गईं फिर भी अग्नि ने उन्हें नहीं जलाया। तो हमें समझना है कि अग्नि तत्व का सार यदि हमें प्राप्त हो जाता है तो अग्नि हमें जला नहीं सकती।

इस प्रकार अग्नि तथा जल, दोनों ही तत्व दिव्य बन जाते हैं। उदाहरणार्थ जिस जल को आप छूते हैं, जो जल आप पीते हैं, जिस जल में आप अपना हाथ डालते हैं, वह चैतन्यित हो

जाता है। इसका क्या अर्थ है? जल की सूक्ष्मता इसमें आ जाती है-शीतल तथा रोगमुक्त करने की शक्ति उस जल में आ जाती है। तो सूक्ष्म होने के पश्चात् सभी शक्तियों की अभिव्यक्ति होने लगती है और इन्हें आप स्वयं देख सकते हैं। इनके लिए आपको प्रयोग (experiment) नहीं करने पड़ते।

अंत में पृथ्वी माँ है। पृथ्वी माँ बहुत महत्वपूर्ण हैं, बहुत महत्वपूर्ण। रूस में (डाचा में) लिया गया एक फोटोग्राफ है जिसमें कुण्डलिनी पृथ्वी माँ से निकल रही है। स्पष्ट दिखाया गया है कि पृथ्वी माँ ही यह सब दर्शाती है। उदाहरण के रूप में आपने फूल देखे हैं, पुष्प यदि आप मेरे कमरे में रखें तो वे खिल उठते हैं, इतने बड़े हो जाते हैं कि लोगों ने कभी इतने बड़े आकार के फूल देखे नहीं होते। मैं उन पर कुछ नहीं करती। मैं तो केवल वहाँ बैठी होती हूँ। फूलों के साथ क्या घटित होता है? धरा माँ का नियम कार्य करता है। माँ ही आपको पोषण प्रदान करती है और आप स्वस्थ हो जाते हैं और इस प्रकार पृथ्वी तत्व की सूक्ष्मता कार्य करती है। पृथ्वी माँ इन सब पेड़ों और पुष्पों को जन्म देती है। यह हमारे अन्दर भी एक बहुत बड़ी भूमिका निभाती है। पृथ्वी माँ के हमसे गहन सम्बन्ध हैं परन्तु हम पृथ्वी माँ का सम्मान नहीं करते। हमने पृथ्वी को प्रदूषित किया है। इस पर लगे पेड़ों को काट डाला है तथा सभी प्रकार की मूर्खता की है। परन्तु वे हमारी माँ हैं। पृथ्वी माँ की बहुत सी सूक्ष्मताएं हममें आ जाती हैं। इनमें से एक गुरुत्वाकर्षण है। गुरुत्वाकर्षण की अभिव्यक्ति से व्यक्ति अत्यन्त आकर्षक हो जाता है-शारीरिक रूप से नहीं आध्यात्मिक रूप से। ऐसा व्यक्ति अन्य लोगों को आकर्षित करता है। लोग सोचते हैं कि उसमें कुछ विशेष है। यह पृथ्वी माँ का एक गुण है। पृथ्वी माँ में यदि गुरुत्वाकर्षण न होता तो हम पृथ्वी की गति की तेजी से ही दूर

जा गिरते। पृथ्वी माँ के अन्य गुणों की अभिव्यक्ति भी हममें होने लगती है। पृथ्वी माँ की तरह से हम भी अत्यन्त सहनशील एवं धैर्यवान बनने लगते हैं। आप यदि सहनशील नहीं हैं, उग्र स्वभाव हैं तो पृथ्वी तत्व की सूक्ष्मता की अभिव्यक्ति आपमें नहीं हुई है। पृथ्वी माँ की ओर देखें, किस प्रकार वे हमारी मूर्खताओं को सहन करती हैं! कितनी ज्यादातियाँ हम उन पर करते हैं परन्तु वे सभी कुछ सहन करती हैं।

श्री गणेश जी का ये गुण है कि वे आरम्भ में सहन करते हैं, एक सीमा तक वे सहन करते हैं। इसी प्रकार हम भी अत्यन्त सहनशील, धैर्यवान और क्षमाशील बन जाते हैं। सभी सहजयोगी जिनमें चैतन्य लहरियाँ हैं उनमें कम से कम ये गुण तो आ ही जाना चाहिए। आपकी चैतन्य लहरियों में जिन चीजों की अभिव्यक्ति होती है वे सभी मैंने आपको बताई हैं। ये समझ लेना आवश्यक है कि अब आप बहुत महान हो गए हैं। अन्य लोगों के साथ ऐसा नहीं हुआ। जो सहजयोगी नहीं हैं उनके साथ ये घटना नहीं घटी। जो लोग चर्च, मस्जिद या मन्दिर जाते हैं आप उन्हें देखें। उनके चेहरे देखें। उनकी ओर देखें वे कैसे दिखाई देते हैं? मन्दिर से उन्हें कुछ नहीं मिला, मस्जिद से उन्हें कुछ नहीं मिला, किसी भी पूजा के स्थान से उन्हें कुछ नहीं मिला। अतः ये सब बनावटी हैं क्योंकि सत्य (वास्तविकता) से उनका नाता ही नहीं जुड़ा। केवल आत्मसाक्षात्कार के बाद ही आपका सम्बन्ध वास्तविकता से होता है और आपके माध्यम से कार्य करने वाली सूक्ष्मताओं की समझ आपको आ सकती है।

मैं ये सब आपको क्यों बता रही हूँ? क्योंकि मैं चाहती हूँ कि आप अपने को समझें, अपने को पहचानें; समझें कि आप क्या हैं और आपको क्या प्राप्त हुआ है। एक बार जब आप स्वयं को समझ लेंगे, स्वयं को पहचान लेंगे तो

आप बहुत कुछ कर सकते हैं। सर्वप्रथम आप ये कहें कि मैं एक सहजयोगी हूँ। पूर्ण आत्मविश्वास के साथ ये कहें और आत्मविश्वास्त व्यक्ति की तरह देखें कि सहजयोगी के रूप में मैंने क्या किया है? सहजयोगी के रूप में मैं क्या कर सकता हूँ? कुछ सहजयोगियों ने अद्भुत कार्य किए हैं। उन्होंने सहजयोग का बहुत सा कार्य किया है। परन्तु कुछ अन्य सहजयोगी अब भी मुझे लिखते हैं कि, "मेरे पति मुझसे झगड़ते हैं, मेरा बेटा ऐसा है, मेरी माँ ऐसी है।" मुझे पत्र के बाद पत्र आते रहते हैं। आप एक सहजयोगी हैं। आपको चाहिए कि अपनी सूक्ष्मताओं को देखें और इन्हें कार्यान्वित करें। लोग सोचते हैं कि मैं यहाँ उनकी, उनके परिवार की, उनकी नौकरियों की समस्याओं का समाधान करने के लिए हूँ। इस कार्य के लिए मैं यहाँ नहीं हूँ। मैं यहाँ आपको आत्मसाक्षात्कार देने तथा आपको प्राप्त हुई उपलब्धियों का ज्ञान देने के लिए हूँ। इसे आप चुनौती के रूप में स्वीकार करें। चुनौती की तरह आप इसे लें तो आप हैरान होंगे कि किस प्रकार आपकी सहायता होती है और किस प्रकार आपको परिणाम प्राप्त होते हैं।

सहज का अर्थ केवल यही नहीं है कि आपको स्वतः आत्मसाक्षात्कार मिल जाए। इसका अर्थ ये भी है कि आपको सहजता प्राप्त हो जाए। पूर्ण प्रकृति सहजता प्राप्त करती है। ये सभी सूक्ष्म गुण जो मैंने आपको बताए हैं ये भी सहजता प्राप्त करके कार्यान्वित होते हैं। निःसन्देह

गण और देवदूत आपकी सहायता कर रहे हैं परन्तु अभी आपको उनकी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। मुख्य चीज़ तो ये है कि आप महसूस करें कि आप क्या हैं, आप को क्या प्राप्त हुआ है और आपने इसका कितना सामना किया है तथा इसने किस प्रकार कार्य किया है। मैंने देखा है कि जब भी मुझे कोई छोटी-मोटी समस्या होती है तो यह (परम चैतन्य) तुरन्त कार्य करता है। ऐसे स्थान पर और ऐसे लोगों में ये कार्य करता है जिसकी मैंने कभी आशा भी न की थी! सभी कुछ कार्यान्वित हो जाता है। परन्तु ये सब आपके हित के लिए होता है, आपके विकास के लिए होता है और आपको ये समझाने के लिए होता है कि आप सहजयोगी हैं। आप परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश कर गए हैं। परन्तु यह चीज़ आपको विकसित करनी होगी।

अन्तर्दर्शन आपको बताएगा कि आप इन सभी सूक्ष्म गुणों को कार्यान्वित कर रहे हैं कि नहीं। अन्तर्दर्शन यदि आप करने लगेंगे तो यह देखकर आप हैरान हो जाएंगे कि आपमें शक्तियाँ हैं और आप चमत्कारिक रूप से कार्य कर सकते हैं।

मैं आप सबको आशीर्वाद देती हूँ। कृपया ये सभी सूक्ष्म गुण अपने अन्दर विकसित करें। पहले से ही ये आपमें विद्यमान हैं, आपको कुछ नहीं करना; केवल इन्हें समझें और स्थापित करें।

आप सबका हार्दिक धन्यवाद।

ORIGINAL TRANSCRIPT

ENGLISH TALK

I have been telling them that the style of Indian knowledge is very different from the Western mind. In the West, you see, if you say something then they want to have an experimental proof. They'll go to the scientists or to other people who are equipped with knowledge, to know what is said in these books is true or not. They would even judge Christ, they would even judge Moses. They'll judge everybody as if they are the most intelligent and the most capable people, and they'll write books after books against them, disclosing as if they are, those people who have said something, have said out of their minds or something. It's never accepted, normally, and if it is accepted they become absolutely fanatics. So...

Now, according to Indian style of understanding is that first of all, if a great rishi or a great muni or a great, you can call a saint, has said something, then he has said it; while you have to just listen to that, because you are not equally the same. Whatever he has said is his own experience, his own knowledge, and you have no business to judge him or to say this is not true, that is not true. You accept it, and once you get your Self Realization, it's clearly written down: after Self Realization you have to grow, grow into perfect being, and then you can see for yourself what he has said or they have said is the truth. So the approach is different. In one way, if you start going through science, through this, through that, you cannot reach anywhere, and moreover your growth is stunted.

So what you have to do is to go to this knowledge, through believing in what they have said. Whatever Christ has said you have to believe, whatever Mohammed has said you have to believe, whatever Guru Nanaka has said you have to believe, whatever Gyanadeva has said you have to believe, Lao Tse you have to believe: like that, because you are not of that spiritual level. So accept it. Now don't try to analyze it. Everything you try to analyze, and in that analysis you get lost. So once you are a realized soul of that level, and then you grow into your fullness – what we call sampurna – then only you will know whether whatever they have said is true or not, and then you can find out. It's very easy then to know whatever is said is true or not. For Sahaja Yogis now it's very easy to find out if something is real or unreal, it is truth or untruth, it is love or hatred. Only through vibrations you can know. But going beyond that, I'm saying, beyond that one has to know what are these vibrations, and what are they made of. What is the subtle force which is behind those vibrations? We call it this Paramchaitanya; all right, Paramchaitanya, so what? What happens to you when you get Paramchaitanya is something to be understood, the subtleties. As I said, we are made of five elements, all right? So, when you get your awakening, when the Kundalini reaches Sahasrara and opens out your fontanel bone area, you become one with the divine Power; then this divine Power Itself starts flowing through you. A connection is established. Now when She starts flowing through you, this Shakti, this starts flowing through you, then what happens? The subtle part we should understand. The subtle part is like this, that these five elements we are made of, these vibrations gradually start breaking into the subtler form of which they are made.

So the first thing such a person has is the breaks, you see, as it is said that “Word is God.” It's said also in the Bible, “The Word is God.” Now what is this Word? Word is a silent, we can say, silent commandment, we can call it like that. But from that Word comes, according to Indian philosophy, is another thing that we call as bindu. Or we can say Word becomes naad, is a sound, and then it becomes the bindu: means one, what you call it, one small dot, you can say; and then from this dot, you see, all these five elements start coming one after another. The first element that comes out is light – tej – light, is the first element that comes out, so the essence of the first element is light. We call it tej, tejas. Is written of course in Sanskrit, but we should understand that how the light pervades Sahaja Yoga so much, and you see the light all over, everywhere. So the first element which is light, and you can say in

English, the light's subtle thing is, we can say, enlightenment, you can say; but "enlightenment" has another meaning, so we can say it's tej, tej. For example, a person who gets Realization has a face which is very radiant, so we can say the "radiance." The radiance is the subtlety of the light. So this radiance starts showing on your face. Radiance start expressing itself, and with that radiance people get impressed, and they start thinking something special about this personality which has radiance.

Now you have seen My photographs also wherever they are, many-a-times you find lots of light around. That is nothing but the light in Me is giving radiance, because the light becomes subtler. When the light becomes subtler in Me – light, light is one of the elements – when it becomes subtler then it gives radiance, and so this is the subtle growth within you that takes place. Your faces also start shining. They too have radiance and they too have a kind of a different complexion, I would say. This radiance is to be understood, is the subtle of the light of which we are made – light, in the gross manner. Then after this, from the light, comes the second thing which we call as vayu in Sanskrit, meaning the air. So the air that we have, which is gross air, what is the subtle of air is this cool breeze that you get. The cool breeze is the subtle of that air. So the subtle of what you understand as cool breeze is what we call vibrations, the subtle of that is air, which is a part and parcel of our making. So this cool breeze is the second thing that we start getting subtler and subtler. When your growth take place, all these subtle things start expressing themselves. It's not only that you get vibrations but you get the cool breeze, and that is the subtle of air that has built you up.

Then comes the water. We are also made of water. What is the subtle of water is – sometimes English language, you know, becomes a little short of expressions, but they call it, I mean, which makes the skin, hard skin soft. The skin becomes soft. This is another sign of a realized soul, that his – there's some cream they use, isn't it, to soften the face – but this is the wateriness, gives us that luster, that nourishment to make our skin very soft, and that softness of the skin becomes very visible. This is the minimum of minimum I would say, but then a person who is a realized soul becomes a very soft person, very delicate. When he talks to somebody, in his voice there is warmth, or I should say there is jise kehte hein apne yahan pani, Hindi mein kehte hein pani hona: there, to have that flow, watery flow and coolness of the water. So that is the another subtle thing that should be expressed in your behavior, on your skin, on your dealings with others, that you should be like the water which is mobile, which is cooling, which is soothing, which is cleansing. So this also becomes a part and parcel of your being, once you become a realized soul. With this water you have also another thing, we call it as agni: means the fire. So you also have fire, but it's a very silent fire. It doesn't burn anybody, but it burns all the wrong things within you. Whatever wrong things you have it burns, and it burns the wrong things in other people also. For example, a person comes with a great anger towards you; what happens, that this anger becomes cooled down with the fire that is there. Moreover a realized soul cannot get burnt, fire cannot burn. The burning cannot come, to him. It's very important to understand. Also if you are doing something wrong it may burn you, but if you are a good Sahaja Yogi and, I should say, a perfect Sahaja Yogi, fire will never burn you. We have an example of Sitaji, that She went into the fire pariksha, nothing burnt Her.

So this is what one has to understand, that once you get to the subtleties of the fire, so the fire and the water, both of them become sort of divine. For example, the water which you touch, water you drink, whatever you put your hand in the water, the water becomes vibrated - means what? The subtlety of the water comes in it, the coolness, curing power also comes in that water. So when it becomes subtler all these powers start showing, which you can see for yourself. You don't have to experiment. Then the lastly is the Mother Earth. It's most important, this Mother Earth. There is a photograph you might see which was taken in Russia in My dacha where the Kundalini is in the Mother Earth, they have shown clearly. It's there, and it is the Mother Earth which shows it. For example, I have seen flowers, if you keep them in My room, they blossom. They can become very big like that; never people have seen such big flowers, sometimes they see. I am doing nothing, I am just sitting down, and what happens to the flowers? You see now there this principle of the Mother Earth works, the subtle Mother Earth, is works: it's a mother, and that gives you all the nourishment and

makes you grow healthy, and this is how this subtlety works, of the Mother Earth.

Mother Earth is the one who is a giver of birth to all these flowers and all these trees and all that, but it also plays a big part in us. It's not only the Mother Earth that exists without our connection. And we do not respect the Mother Earth. We have polluted it, we have done all kinds of things; we have removed the trees and we have made a mess out of her, but she is our Mother, and so many subtle things of this Mother Earth come into us. One of them is gravity. A person becomes very attractive, not in the physical sense but in the spiritual sense. Such a person attracts others. They feel attracted, and they feel that something special is about this person, you see. This is one of the quality of the Mother Earth. If she had not kept us attracted we would have fallen off with her movement; and also other qualities of the Mother Earth also start manifesting within us, and we become very, I should say extremely tolerant, patient person, tolerant and patient, extremely tolerant and patient. But if you are not tolerant, if you are hot-tempered and all that, that Mother Earth principle has not expressed herself. Look at the Mother Earth, how much she tolerates our nonsense; how many wrong things we do against her, but still she tolerates. Shri Ganesha's quality is to tolerate, to begin with. Up to a point He tolerates. In the same way we too become extremely tolerant, patient and forgiving. This is the minimum of minimum that should happen to all the Sahaja Yogis who have vibrations. Because now I've told you all the things that are expressed in your vibrations.

It's a thing to be understood that what you have become now is something very great. It's not happened to others. It's not happened to somebody who has not been a Sahaja Yogi. You see the people who go to church or to mosques or to temple, see their faces. Look at them, how they do look like. They haven't got anything from the temple, they haven't got anything from the mosque, they haven't got anything from any one of these places where they go to worship. So that is artificial, that has become something, I should say, without any connection with the reality. Only after Realization you are connected with reality, and you can get the understanding of all these subtleties working through you. Why I'm telling you this, because I want you to know and recognize yourself, to understand what you are, what you have got. Once you recognize yourself and understand yourself, you can do a lot. First of all to say that "I am a Sahaja Yogi" itself is, should be very much with self-confidence, and as a self-confident person you should find out, "What have I done as Sahaja Yogi? What can I do as Sahaja Yogi?" Some Sahaja Yogis have done wonders. They have done such a lot of work of Sahaja Yoga, while some Sahaja Yogis are still writing to Me that "My husband is fighting with me, my son is like this, my mother like this"; all the time, you see, letters after letters come to Me. You are a Sahaja Yogi. Now you just see to your subtleties. Work it out. They think I am here to solve their problems, their family problems and their jobs and things. I'm not here for that. I am here to give you Self Realization, and the understanding that whatever you have got you must accept as a challenge. Take it up as a challenge, and you'll be amazed how you will be helped and how you will get the results.

"Sahaja" doesn't mean only that you get spontaneous Realization, it also means you get spontaneity, the whole nature gets spontaneity. All those subtle things that I have told you, they all get spontaneous and they work it out. Of course there are angels and there are ganas who are helping you. But you need not worry about them just now. Main thing is you must realize what you are, what you have got and how much you have faced it, you have got it and how it has worked out. I have seen every time I just have a little problem of something, immediately it works. It works in such quarters and such people that I never expected, just comes in. Everything works out. But whatever works out is for your good, is for your growth, for your understanding that you are a Sahaja Yogi; you have entered into the Kingdom of God, but this you have to develop. Also introspection can tell you that are you working out all those things, or not? If you take to introspection, you'll be surprised to see, yes, you have these powers, and you can do wonders.

So I bless you all. Please develop those subtle things within you. They are already there; you don't have to do anything, only understand and locate.

Thank you very much.

MARATHI TRANSLATION

(Hindi & English Talk)

Scanned from Marathi Chaitanya Lahari

एवढ्या बंडीमध्ये आणि अनेक असुविधा असूनही तुम्ही सर्वजण इथे आलात याचा एक माता म्हणून मला फार आनंद व समाधान वाटत आहे. दुसरा कुठला सोयिरकर दिवस जमत नव्हता म्हणून तुमच्यासाठी गैरसोयीचा असूनही हाच दिवस ठरवण्यात आला. विमानतळावर माझे नीट दर्शन झाले नाही असे बऱ्याच लोकांचे म्हणणे होते, मला पण त्यावेळी तुमच्याकडे जास्त लक्ष देता आले नाही. म्हणून आज तुम्ही सर्वजण इथे जमलात हे फार धन झाले, दिल्लीवाल्यांचा अशा कार्यक्रमाबद्दलचा उत्साहही वाखाणण्यासारखा आहे, असाच उत्साह सगळीकडे मिळाला तर हा भारत देश एक दिवशी सहजयोगाचे महाद्वार बनेल. (टाळ्या)

सध्याचा काळ हा एक घोर कलियुग म्हणावा लागेल. कलियुगाचे एक वैशिष्ट्य असे की माणूस घटकन भ्रामित्तये अडकतो, त्याचा सारासार विवेक काम करेनासा होतो आणि त्या भ्रंतीमुळे तो कुठे भरकटत राहतो त्याचे त्यालाच कळत नाही. आजकाल लोक वाढेल त्या पुढाऱ्यांमागे लागतात, चुकीच्या गोष्टींना बळी पडून त्यांचा स्वीकार करतात आणि आपलेच नुकसान करून घेतात. धर्माचा मार्ग सोडून अधर्माच्या मार्गाला न बिचकता लागतात आणि त्याबद्दल त्यांना काही फिकीरही वाटत नाही. उलट त्याच चुकीच्या गोष्टी पुन्हा-पुन्हा करत राहतात आणि वर त्याची बढाई भारत राहतात. जणू अशा गोष्टी करणे म्हणजे सत्कर्मच केल्यासारखे ते समजतात. अशा या पणव्यासारख्या चारी बाजूनी पेटलेल्या जगामध्ये तुम्ही सहजयोगी म्हणून जगत आहात. या कलियुगाचे अनेक प्रताप पुराणात सांगितले आहेत, एक कहाणी अशी आहे की हा कल एक दिवस नलराजाच्या तावडीत सापडला आणि त्या कलीनेच त्याला त्याची पत्नी दमयंतीपासून दूर होण्यास भाग पाडले असल्यामुळे नलराजाने कलीचा सर्वनाश करण्याचे ठरवले. त्यावेळी कली राजाला म्हणाला "माझे महत्त्व काय आहे हे तू आधी जाणून घे आणि मग मला मारायचे असले तर खुशाल ठार कर. पण आधी हे लक्षात घे की मानवजात भ्रांतीच्या विळख्यात माझ्यामुळे आल्यावरच आत्मसाक्षात्काराचे महान कार्य होणार आहे."

आत्मसाक्षात्कार मिळवणे हेच मनुष्य-जन्माचे परमश्रेष्ठ उद्दिष्ट आहे. भारतामध्ये हे फार पूर्वीपासून मान्य झालेले आहे व सांगितले गेले. इतकेच नव्हे तर त्याशिवाय जीवनातील कसल्याही कीर्तीला वा सुखाला अर्थ नाही हीच शिकवण इथल्या संस्कृतीमधून पडवली गेली. जीवनात मिळवण्यासारखी सर्वश्रेष्ठ वस्तू हीच आहे व या कलियुगातच तुम्हालाही आत्मसाक्षात्कार मिळाला आहे आणि त्याची महानता पण तुमच्या लक्षात आली आहे. त्याच्या गहनतेत उतरल्यावरच तुम्हाला शांति व आनंद मिळणार आहे. पुष्कळजण अशा उच्च स्थितीला आले आहेत. या गहनतेमध्ये सूक्ष्मता

आल्यावर तुमच्या लक्षात येते की तुम्ही कुणीकडे अग्रेसर होत आहात, तुमची दशा कोणती आहे हे तुम्ही समजू शकता. ही सूक्ष्मता तुम्हाला अजून मिळाली नसेल तर तुम्ही कुठेतरी कमी पडत आहात हे प्रथम लक्षात घ्या आणि ती कमतरता (दोष) ठीक केले पाहिजेत. ह्या सूक्ष्मतेचा विचार करताना आपल्याला शास्त्राचाही चांगला आधार मिळतो. आपला हा भारतदेश गहन तत्त्वज्ञानाने, तसाच उच्च विचारांनी भारलेला देश आहे, आपल्याकडील या तत्त्वज्ञानाचे गंध अद्वितीय आहेत. इतकी खोल तात्त्विक ग्रंथसंपदा जगामध्ये इतरत्र कुठे आढळत नाही. हे ज्ञान बाहेरच्या देशांत पोचले तरी त्याच्या गहनतेत उतरण्याची क्षमता फक्त तुम्हा लोकांजवळच आहे. पण आपल्या लोकांचाच आपल्या या वाङ्मयीन पवित्र संपत्तीची नीटशी कल्पना नाही. प्राचीन काळापासून मानवी जीवनाबद्दलच्या उच्च तत्त्वांचे वर्णन व विश्लेषण आपल्या ग्रंथांमध्येच आढळते. उदा. आत्मसाक्षात्कार म्हणजे काय व तो मिळाल्यावर मानवाला कोणत्या गोष्टी प्राप्त होतात हा विषय पहा. आता मी पण त्याबद्दल बरीच माहिती उघड करून तुम्हाला सांगितली आहे व समजावली आहे, पण त्याचा साक्षात अनुभव मिळाल्याशिवाय तुमचे खरे समाधान होणार नाही, म्हणून ही अनुभूति मिळवण्याची व जाणण्याची फार आवश्यकता आहे.

प्रथम आपण हे लक्षात घेतले पाहिजे की आपला देह पंचमहाभूत तत्त्वांमधून बनला आहे आणि या पाच तत्त्वांद्वारेच सर्व कार्य होत असते. त्यामधूनच सर्व घटना घडून येतात व आपला मानव-जन्मही त्याच तत्त्वांपासून बनलेला आहे. जनावरांमध्येही तीच तत्त्वे कार्यान्वित असतात. पण मानवामध्ये त्यांचा प्रादुर्भाव प्रकर्षाने असतो व त्यामुळेच मानवप्राण्यांमध्ये स्थापित केलेली कुण्डलिनी त्याच्यामधूनच कार्यान्वित होऊ शकते. म्हणून मानव जन्म ही एक उच्च अवस्था आहे व कुण्डलिनीचे उत्थान हे त्याच्याकडूनच होण्यासारखे आहे. म्हणून, आत्मसाक्षात्कार हेच मानवजन्माचे परम उद्दिष्ट आहे व तेच तुमच्यामधील कुण्डलिनी करणार आहे. मी हे जे काही कुण्डलिनी शक्तीबद्दल सांगत आहे तेही आपल्या अनेक ग्रंथांमधून पूर्वीच लिहून ठेवलेले आहे. बाराव्या शतकात ज्ञानेश्वरांनी त्याबद्दल स्पष्ट लिहिले. सोळाव्या शतकात तर कबीरासारख्या अनेक संतांनी त्याबद्दल खूप सांगितले, तुकाराम, रामदास, नामदेव अशा संतांनीही आपल्यामध्ये ही शक्ती असते व ती जागृत केली पाहिजे हेच सांगितले. असे सर्व कार्य याच देशात घडून आले कारण या देशातले रहिवासी एक विशेष धारणेचे लोक आहेत, धर्मांमध्ये रुजलेले लोक आहेत, त्यांच्याजवळ धार्मिकता आहे. अनेक शतकांपासून ही संस्कृति रुजल्यामुळे आधार्मिक गोष्टींकडे ते बळकट नाहीच. इतर देशात मी पाहते की

धर्म व अधर्म यांत त्या लोकांना काही फरकच वाटत नाही, उलट अधार्मिक कृत्ये करणे एक आव्हान म्हणून ते स्वीकारतात. उदा. मादकद्रव्यांचे सेवन करण्यात कशाला भीति बाळगायची असा विचार ते आग्रहाने करतात आणि त्यांतच स्वतःला फार मोठे वीर म्हणू लागतात. या देशातील व इतर देशातील लोकांच्या वृत्तीमध्ये हा मूलभूत फरक आहे. म्हणून भारतातील सर्व लोक, मग ते शहरातील, खेड्यातील, शिकलेले, अशिक्षित कसेही असले तरी सर्वजण धर्म व अधर्म हा फरक पाळणारे असतात. बाहेरच्या देशांमधील लोक पाप वा पुण्य ह्यांच्याकडे बघायलाच तयार नसतात. म्हणून तुम्ही विशेष आहात असे मी म्हणते. पण तितकीच दुसरी गोष्ट म्हणजे त्या लोकांना शोधक (खोज) नजर जास्त आहे तशी शोधक किंवा चिकित्सक प्रवृत्ति आपल्या लोकांमध्ये कमी आहे. आपण लोक परंपराधीन आहे, जे चालत आले आहे ते करत राहण्याचा आपला कल असतो. याला कारण म्हणजे त्या लोकांनी एक प्रकारे अंधार पाहिला असल्यामुळे प्रकाशाचे महत्त्व ते मानतात. हीच आपल्या लोकांमध्ये कमतरता आहे असे मला वाटते, आणि म्हणूनच भारतीयांना सहजयोगाच्या महनतेत उतरणे अवघड जाते. म्हणूनच तुम्ही लक्षात घ्यायला हवे की सहजयोगाचे बीज तुमच्यामध्ये अंकुरल्यावर त्याचा मोठा वृक्ष कसा होईल ह्याची काळजी घेतली पाहिजे. त्यासाठी ध्यान केलेच पाहिजे व त्याचप्रमाणे सहजयोगाचा प्रसार केला पाहिजे, त्याशिवाय तुम्ही स्वतःची उन्नति करू शकणार नाही. प्रत्येक सहजयोग्याने कमीतकमी एक हजार लोकांना आत्मसाक्षात्कार दिला पाहिजे, त्या बाबतीत लाज वाटण्याचे काही कारण नाही, कसला संकोच बाळगण्याची जरूर नाही, उलट स्पष्टपणे सरळ-सरळ बोलण्याची जरूर आहे. कारण तुम्ही भारतीय आहात म्हणून मी वारंवार सांगत असते की भारतदेशाचे नागरिक असणे ही तुमच्याजवळ असलेली मूल्यवान गोष्ट आहे, इथे जन्म मिळणे हे हजार जन्मांमध्ये केलेल्या सत्कर्मांचे फळ आहे. या मातीतून मिळालेला धर्म- हिंदू, मुसलमान या अर्थाने नव्हे- हा येथील लोकांचा स्वाभाविक सज्जनपणाबद्दलचा ओढा आहे आणि त्याचे कारण म्हणजे आपल्या देशात अनेकानेक थोर ऋषी-मुनींनी दिलेली शिकवण व उपदेश, जीवनामध्ये पावित्र्य राखण्यास त्यांनी शिकवले, त्यासाठी कसली जबरदस्ती केली नाही तर माणसांच्या संपूर्ण स्वातंत्र्यातूनच त्यांना पावित्र्यतेकडे वळवले. ह्या स्वतंत्रतेमध्येच तुम्ही आलात, स्वतंत्रता म्हणजे 'स्व'चे तंत्र म्हणजेच आत्म्याचे तंत्र. हिंदी व संस्कृतभाषेमधील सर्व शब्दांना, व्यंजनांनाही एक विशेष अर्थ असतो, अक्षरांनाही अर्थ आहे, त्यामध्ये बरेच काही व्याकरण भरलेले आहे.

माझ्या हे सर्व सांगण्याचा हेतु एवढाच आहे की आपल्यामध्ये या पाच तत्वांना एक-एक व्यंजन म्हणून स्थापित केलेले आहे. या व्यंजनालाच शक्ति म्हणतात. व्यंजनामध्ये शक्ति आल्यावर त्याला अर्थ येतो. **माता आपल्याला वाटते की नावात काय, मुला-मुलींचे काहीही नाव ठेवले तरी चालेल, पण हे बूक आहे. खरे तर मुलाचे नावही नीट विचार करून ठेवणे चांगले, कारण नावाच्या एक-एक**

अक्षरामध्येही एक सुप्त अर्थ असतो. अक्षरामुळे शब्दाला अर्थ येतो, अर्थ जणू शब्दाची सेवा करत असतो. आपल्या देशात वेगवेगळ्या गोष्टींबद्दल वेगवेगळे शब्द वर्णन करताना वापरतात. ही भाषा-शैली नसून आपल्या संस्कृतीचे ते वैशिष्ट्य आहे. म्हणून या संस्कृतीमध्ये जन्माला आलेले, शिकलेले अशा लोकांना हे समजून घ्यायला हवे की ही आपली अशी विशिष्ट संस्कृति आहे. पण बहुतेक लोकांना या आपल्याच संस्कृतीची नीट माहिती नसते, आपण जे काही करतो ते का करतो हे जाणण्याची उत्सुकता नाही, वाडवाडिलांपासून चालत आलेले आहे म्हणून करावचे एवढेच ते समजतात. म्हणून आपली संस्कृति मुळातून जाणणे हे फार महत्वाचे आहे, म्हणजे आपली ही धार्मिकता कशामध्ये आहे हे समजून येईल. माणसांमध्ये ही धार्मिकता कशी व कुठून आली हे समजून घेतले पाहिजे. परदेशी लोकांची विचारधारा आणि आपल्या लोकांची विचारधारा खूप वेगळी आहे, त्याची पद्धति पण वेगळी आहे. **परदेशी लोकांना असे काही सांगितले की आधी ते पडताळून पाहतात, शास्त्रीय पद्धतीने ते बरोबर आहे की नाही याच्या मागे लागतात, पण त्यातून ते किती प्रगति किंवा निष्कर्षापर्यंत येऊ शकणार? आपल्याकडील विचारधारा वेगळी आहे, म्हणजे थोर ऋषी-मुनींनी जे सांगून ठेवले आहे त्याची परीक्षा घेण्याची जरूरच वाटत नाही व सहजपणे ते स्वीकारले जाते, कारण ते ज्ञानसंपन्न होते म्हणून ते सांगतात त्याला मान्यता मिळते. शिवाय आत्मसाक्षात्कारानंतरच त्याची सत्यता पटण्यासारखी असते.**

सहजयोगातही तुम्ही असेच वागता, मी काही सांगितले की तुम्ही ते, माताजी म्हणतात म्हणून, बरोबर समजता. आत्मसाक्षात्कारानंतर तुम्हाला योग्य ती स्थिती येते तेव्हा तुम्हाला आपोआपच त्याची सत्यता समजते. म्हणून आपल्याकडे गुरुला फार उच्च स्थान दिले जाते, गुरूने जे सांगितले त्याबद्दल शंका मनातही येता कामा नये. अर्थात आजकाल ज्या प्रकारचे गुरू ठिकठिकाणी बनत चालले आहेत त्याबद्दल काही बोलणे कठीण आहे. **पण खरा गुरू ओळखण्याची पद्धति आहे आणि ती म्हणजे जो तुम्हाला साक्षात् अनुभव देतो तोच खरा गुरू, बैसे देऊन हिरे-मोती हत्तातून काढून दाखवणारे गुरू खरे गुरू असू शकत नाही, असे लोक दुकानदारी करत असतात. म्हणून अनुभव प्राप्त करून घेतला पाहिजे व तो मिळाल्यावर त्याचा स्वीकारही केला पाहिजे, त्याच्या महनतेत उतरून त्याचा पडताळा करून घेतला पाहिजे. याच्या उलट पाश्चात्य देशांमध्ये तुम्ही काही सांगितले तरी ते शास्त्रीय परीक्षण व सिद्धतेच्या मागे लागतात, मग ते परीक्षण करणारे त्या क्षमतेचे आहेत का नाही याची ते पत्ती करत नाही, पण ते शास्त्रीय परीक्षेचा आग्रह धरतात, एक परीक्षा झाली तरी दुसऱ्या कसोटीवर आणखी परीक्षा करू पाहतात, त्यावरून वादविवाद-वर्चा करतात. याला कारण म्हणजे ते आत्मसाक्षात्कारी नसतात व त्यांमध्ये संपूर्णपणे अधिकारी झालेले नसतात. म्हणून जोपर्यंत कसल्याही प्रणालीचा साक्षात् व जिवंत अनुभव होत नाही व त्या अनुभवांमध्ये तुम्ही पूर्णपणे Nourish होत नाही तोपर्यंत तुमच्यामध्ये एक अधुरेपण टिकून**

राहते व त्यामुळे सत्य का असत्य या निर्णयाप्रत तुम्ही येऊ शकत नाही. म्हणून हा बुद्धीचा खेळ कमी करून आपल्या शास्त्रांमध्ये जे सत्य म्हणून सांगितले गेले आहे ते मानलेच पाहिजे.

नानकसाहेबांनी जो गुरुग्रंथ तयार केला त्यासाठी सर्व आत्मसाक्षात्कारी संतांच्या कवितांचा आधार घेतला. पण त्याचे नुसते पारायणच केले जाते हाहि एक खुळा प्रकार आहे. त्या गुरुग्रंथात जे लिहिले आहे ते समजण्याचा प्रयत्न केला पाहिजे. तरच ते आपण आत्मसात करू शकू व फलस्वरूप आपण उत्क्रांत होऊ शकू. म्हणून मी वर सांगितल्याप्रमाणे गुरु जे काही सांगतो त्याला प्रमाण म्हणून स्वीकारले पाहिजे. कारण तुम्ही अजून त्या ज्ञानामध्ये इतकी प्रवीणता मिळवलेली नाही. ती प्रवीणता मिळवण्याचा तुम्ही सातत्याने प्रयत्न करायला हवा. तशी स्थिति मिळवल्यानंतर गुरुच्या सांगण्याचा पडताळा घेऊन पहा.

परदेशी सहजयोग्यांमध्ये मला दिसून येते की ते लवकर पार होतातच पण शिवाय लवकर गहनता पण मिळवतात. आपल्या लोकांमध्ये तेवढी गहनता अजून आलेली नाही. आमच्याकडे पूर्वापार हेच चालत आले आहे, अमक्या गुरूने हे सांगितले आहे, श्रीराम असे म्हणत होते इ.च्या पलीकडे आपण जायला तयार नसतो. तुम्ही त्यांच्या जवळ गेलात का, त्यांना आपल्यामध्ये सामावून घेतले का, त्यांच्याकडून तुम्हाला काही प्रेरणा मिळाली का असल्या गोष्टींचा विचार करत नाही. आता महाराष्ट्रातील सर्व संतांनी भजने गायला लावली. एक बारकरी पंथ काढला- तसे प्रत्येक ठिकाणी पंथच पंथ असतात- पण त्यांना बिचाऱ्यांना कल्पना नव्हती की हे लोक वर्षानुवर्ष तेवढेच करत बसतील म्हणून, त्यांच्यावर विचार करून, गहनतेत उतरून, अग्रेसर बनतील अशी त्यांची आशा होती. म्हणून साधु-संतांनी जे सांगितले तेवढेच चालत राहिले. महाराष्ट्रात बारकरी लोक महिनाभर चालत-चालत वारीला जातात, अंगावर फाटके-तुटकेच कपडे घालतात. झांजा-टाळ कुटत चालत राहतात आणि वारी करून परत आल्यावर देव भेटला असे समजात. पण खरे तर त्यांच्या मागचा संताचा उद्देश होता की इकडे-तिकडे चित्त भरकटण्याऐवजी त्यांनी परमात्म्याचे ध्यान करावे, नामस्मरण करावे म्हणजे चित्त स्थिर होईल, शांत होईल. अशा तऱ्हेने आपल्याकडे पंथ निघाले, तेच-तेच लोक करत राहिले पण त्याचा काही फायदा त्यांना मिळाला नाही.

तुम्ही सहजयोगी आहात, तुम्हाला आत्मसाक्षात्कार मिळाला आहे म्हणून तुम्ही विशेष लोक बनले आहात. आता तुम्हाला गहनतेत उतरलेच पाहिजे; त्यातूनच तुम्हाला सूक्ष्मता प्राप्त होईल. ही सूक्ष्मताच मी आता समजावून सांगणार आहे.

(पुढील भाषण इंग्रजीमधून झाले)

पाश्चात्य देशांमध्ये कुणी काही सांगितले तरी प्रथम त्याची प्रायोगिक चाचणी परीक्षा घेण्याची त्याची वृत्ति असते. ग्रंथांमधून लिहिलेल्या गोष्टींबद्दलही त्यांचा हाच आग्रह असतो. म्हणून ते लोक शास्त्रीय पद्धतीने प्रयोग करून पडताळा घेतल्याशिवाय काहीही मान्य करत नाहीत. ख्रिस्त, मोझेस अशा लोकांच्याबाबतीतही त्यांचा

हाच दृष्टिकोन असतो. याला कारण म्हणजे ते लोक स्वतःला बुद्धिवान व अधिकारी समजतात. तसे झाले नाही तर पुस्तकामागून पुस्तके लिहून ते आपली अमान्यता जाहीर करतात. पण जर काही त्यांना शेवटी पटले तर मात्र ते त्या गोष्टींबद्दल दुराग्रही बनतात. याच्या उलट भारतामध्ये थोर साधु-संतांनी जे सांगितले ते त्यांच्या ज्ञानाधिकारातून येत असल्याने सर्व लोक स्वीकारतात. अशा थोर व ज्ञानी पुरुषांच्या बोलण्याबद्दल कसलीही शंका घेणे त्यांना प्रशस्त वाटत नाही व त्याची परीक्षा घेण्याची जरूरी वाटत नाही. तसेच आत्मसाक्षात्कार मिळाल्यानंतर त्या अनुभूतीमध्ये प्रगल्भ झाले पाहिजे असे सांगितलेले आहे. त्यामध्ये परिपूर्णता मिळवली पाहिजे व नंतरच संतांच्या सांगण्याचा पडताळा येईल असेही सांगितले आहे. हा दृष्टिकोनामधील मूलभूत फरक आहे. तुम्ही नुसते विचार करून शंका-कुशंका काढत बसलात तर निष्पन्न काहीच होणार नाही आणि तुमच्याच प्रगतीमध्ये अडथळे येतील. यावर उपाय हाच आहे की हे ज्ञान मिळवण्यासाठी संतांनी सांगितलेल्या वचनांवर विश्वास ठेऊनच त्याकडे वाटचाल केली पाहिजे. ख्रिस्त, मोहम्मद, गुरुनानक, ज्ञानदेव इ. थोर पुरुषांनी जे सांगून ठेवले आहे त्यांच्यावर म्हणूनच विश्वास ठेवायला हवा. कारण आपण अजून त्यांच्या अध्यात्मिक स्थितीला आलेलो नाही. त्याचे विश्लेषण करत बसू नका, तसे केले तर त्यातच हरवून जाल. विश्वास ठेऊन तुम्ही गहनतेमधून त्यांच्या स्थितीपर्यंत आलात तरच त्यांचे म्हणणे सत्य आहे का नाही हे तुम्हाला समजेल.

सहजयोग्यांना आता सत्य व असत्य जाणण्याची क्षमता मिळालेली आहे. सत्य वा असत्य, प्रेम वा द्वेष हे सर्व तुम्ही व्हायब्रेशन्सवर जाणू शकता. पण त्याही पलीकडे जाऊन ही व्हायब्रेशन्स म्हणजे काय हेहि तुम्हाला समजून घ्यायचे आहे; त्या व्हायब्रेशन्समध्ये काय आहे हे समजून घ्यायचे आहे; त्यांच्यामागे कसली सूक्ष्म शक्ति आहे हे समजून घ्यायचे आहे. हे परमचैतन्य मिळाल्यावर तुमच्यामध्ये सूक्ष्म अशी कोणती घटना होते हे पहा. आपला देह पंचमहाभूतांपासून बनला आहे. आत्मसाक्षात्कारानंतर म्हणजे कुण्डलिनी वर येऊन टाळूमधून बाहेर येऊन सर्वव्यापी शक्तिमध्ये मिसळली की हीच परमेश्वरी शक्ति तुमच्यामधून बाहेर लागते. त्यावेळेस ही शक्ति त्या पंचमहाभूतांच्या सूक्ष्म स्वरूपात शिरते. परमेश्वरापासून आलेल्या आणखी एका सूक्ष्म वस्तूला भारतीय तत्त्वज्ञानात "बिंदू" म्हणतात. बायबलमध्ये ज्याला GOD असे म्हणतात त्या शब्दाचा आणखी एक सूक्ष्म अर्थ Silent Commandment असा सांगता येईल. म्हणजे भारतीय तत्त्वज्ञानाप्रमाणे शब्दामधून आधी नाद येतो हा नाद नंतर बिंदू होतो; त्या बिंदूमधून ही पंचमहाभूत तत्त्वे एकापाठोपाठ बाहेर येतात. सर्वप्रथम आलेले तत्त्व म्हणजे LIGHT (तेज)- सहजयोगात ह्याचाच सगळीकडे प्रभाव असतो. प्रथम तत्त्वाचे मर्मितरूप म्हणजे LIGHT उदा. साक्षात्कारी माणसाचा चेहरा तेजस्वी असतो. Radiance is the subtlety of LIGHT, त्यामुळे त्या व्यक्तीचा लोकांवर प्रभाव पडतो व लोकांना त्याचे

वैशिष्ट्य जाणवते. माझ्या बऱ्याचशा फोटोमध्ये माझ्या चेहऱ्यामोवती तेजस्वी प्रकाश दिसतो हे तुम्ही पाहिले आहे. म्हणजे तेज सूक्ष्म झाल्यावर दिसू लागते. हीच तुमच्यामधील सूक्ष्मतेची प्रगति. तुमच्या चेहऱ्यावरही हळूहळू तेज येऊ लागते. तेजानंतर वायु तयार झाला, वायूचे सूक्ष्म रूप म्हणजे थंड वृत्तान्त. जशी जशी तुमची स्थिति उन्नत होते तसे तसे हे तत्त्वाचे सूक्ष्म स्वरूप तुमच्यामधून प्रकट होऊ लागते. म्हणजे नुसती व्हायब्रेशन्स येतात असे नव्हे तर थंड झुळूक जाणवते आणि हेच वायुतत्त्वाचे सूक्ष्म रूप. त्यानंतर जलतत्त्व आले, आपल्यामध्ये जल आहेच. जलतत्त्वाचे सूक्ष्म रूप म्हणजे त्वचेवरची मृदुता. आत्मसाक्षात्कारी व्यक्तीची ही आणखी एक खूण आहे, ती प्रत्यक्ष जाणवते. अशी व्यक्ति नाजूक मृदु वृत्तीची बनते. त्याच्या बोलण्यात मृदुता असते, त्याच्या शब्दातून वहन होते. ही मृदुता त्याच्या स्वभावातून, वागण्या-बोलण्यातून जाणवते व जलाच्या स्वच्छ करण्याच्या गुणासारखी काम करते. त्यानंतरचे तत्त्व म्हणजे अग्नि. हा अग्नि शांत, शीतल असतो. त्याचा ताप होत नाही. उलट आपल्यामधील चुकीच्या प्रवृत्ति जळून जातात, इतरांच्यामधील चुकीच्या गोष्टी जळतात. उदा. एकदा रागाने मडकलेला माणूस नुसता माझ्यासमोर जरी आला तरी त्याचा राग उतरतो. याशिवाय आत्मसाक्षात्कारी पुरुषाला जाळता येत नाही, तुम्ही पूर्णपणे सहजयोगी झालात तर अग्नीपासून तुम्हाला भय नाही. उदा. सीतादेवीने अग्निप्रवेश केला तरी ती जिवंत राहिली. म्हणजे जल आणि अग्नि दोन्हीमध्ये दिव्यत्व येते. म्हणूनच ज्याला तुम्ही स्पर्श करता, पाण्यात जेव्हा हात बुडवता तेव्हा त्या वस्तुला व पाण्याला व्हायब्रेशन्सवर मिळतात, म्हणूनच जलाचे गुण थंडपणा व पाण्याची निवारणशक्ति त्याच्यात प्रकट होते. अशा अर्थाने सूक्ष्मता प्राप्त झाल्यावर अनेक गुणांचा आविष्कार होत राहतो. तो प्रत्यक्ष दृष्टिस येतो आणि त्यासाठी प्रयोग करण्याची जरूर उरत नाही. शेवटचे तत्त्व म्हणजे भूमीमाता-तत्त्व. रशियामधील माझ्या एका फोटोमध्ये कुण्डलिनी भूमातेमध्ये आलेली दिसली; माझ्या खोलीत ठेवलेली फुले खूप बहरतात, लोक म्हणतात की अशी मोठ्या आकाराची फुले कधीच बघायला मिळत नाहीत. हे कसे होते? तर हे भू-तत्त्व कार्य करते; फुलांना पोषकता पुरवून त्यांची वाढ करते. भू-तत्त्वाची सूक्ष्मता असैच कार्य करते, त्याच्यापासूनच फुले, वृक्ष यांना जन्म मिळतो, पण आपल्यामध्येही हे तत्त्व खूप कार्य करत असते, पण आपण भू-मातेचा आदर करत नाही, त्याला नुकसान पोचवतो. प्रदूषण माजवतो, झाडे तोडतो. या भूमि-तत्त्वापासून आपल्याला सूक्ष्मपणे अनेक गुण मिळतात, एक म्हणजे भारदस्तपणा (gravity). ज्याच्यामुळे माणूस दुसऱ्यांना आकर्षून घेतो, दुसऱ्यांवर प्रभाव पाडतो. पृथ्वीमातेनेही आपल्याला धरून ठेवले नसते तर आपण उडालो असतो (फेकले गेलो असतो) याशिवाय भू-मातेकडून आपल्याला सहनशीलता व संयम मिळतो, जो माणूस रागीट व शीघ्रकोपी असतो त्याच्यामधील भू-तत्त्व क्षीण असते. पृथ्वीमाता माणसाने दिलेले सर्व त्रास सहन करते. श्रीगणेशसुद्धा एका मर्यादेपर्यंत खूप सहन करतात, म्हणून आपणही सहनशील, संयमी

बनले पाहिजे. ज्यांना व्हायब्रेशन्स आहेत अशा सहजयोग्यांनी कमीत-कमी ही क्षमता मिळवली पाहिजे.

या सगळ्या गोष्टी तुमच्या व्हायब्रेशन्समधून दिसून येतात. तुम्ही आता एक महान स्थिति मिळवली आहे, ही गोष्ट म्हणूनच तुम्ही नीट समजून घेतली पाहिजे. इतरांमध्ये या घटना घडत नाहीत. बर्च, मंदिर किंवा मशिदीत नुसते जाऊन या गोष्टी होत नाहीत, त्यातून त्यांनी काही मिळवले नाही. त्यांच्या चेहऱ्याकडे बघितले तर तुम्हाला दिसून येईल, कारण अशामधून त्यांचा 'सत्या'बरोबर संबंध आलेला नसतो, आत्मसाक्षात्कारानंतरच हा संबंध घटित होतो आणि तुम्हाला या सूक्ष्म गोष्टी समजू लागतात आणि ती सूक्ष्म तत्त्वे तुमच्यामधून कार्यान्वित होतात. तुम्ही 'स्वतःला नीट ओळखावे' म्हणून मी या सर्व गोष्टी आज सांगत आहे. स्वतःला नीट ओळखू शकलात व समजू शकलात की तुम्ही खूप काही कार्य करू शकता, आत्मविश्वासाने 'मी सहजयोगी आहे' असे तुम्ही स्पष्टपणे सांगू शकता. मग 'मी सहजयोगासाठी काय करत आहे' ही समजही तुम्हाला येते. तुमच्यापैकी काही सहजयोग्यांनी प्रचंड कार्य केले आहे पण इतर बरेच जण अजूनही 'माझे नवरा माझ्याशी फार भांडतो, माझे मुलगा नीट वागत नाही, माझी आई अशी आहे' अशा फालतू गोष्टी मला सांगत राहतात किंवा पत्रातून कळवतात. सहजयोगात तुम्ही यांच्यासाठी आलात का? तुमच्या बाबतीत जे काही संसारगत होत आहे त्याचा निमूटपणे स्वीकार करा आणि मगच तुम्हाला कशी मदत मिळते. तुमचे प्रश्न कसे सुटतात याचे तुमचे तुम्हालाच आश्चर्य वाटेल. 'सहज' म्हणजे नुसते तुम्हाला आत्मसाक्षात्कार सहजपणे मिळतो असे नाही तर तुम्ही स्वतः 'सहज' बनायचे आहे. मगच तुमचा स्वभाव, तुमच्यामधील सूक्ष्म तत्त्वे 'सहज' बनून जातात आणि सर्व काही घडून येते. तुमच्या मदतीला गुण आणि यक्ष तत्त्वर आहेतच. पण सध्या त्याची काळजी करू नका. मुख्य व महत्त्वाची गोष्ट म्हणजे तुम्हाला जे मिळाले आहे त्याची महानता लक्षात घेऊन स्वतःला नीट ओळखा. मला जरा कुठे काही प्रश्न दिसला तरी लगेच कार्य घडून येते व प्रश्न सुटतो. Everything Works out. पण हे सर्व तुमच्या कल्याणासाठी व उन्नतीसाठी होत असते. ही स्थिती मिळवण्याचा प्रयत्न तुम्ही सातत्याने केला पाहिजे, आत्मपरीक्षणामधून तुम्ही स्वतःला सुधारू शकता.

म्हणून मला आशा आहे की तुम्ही तुमच्याजवळच्या या सूक्ष्म शक्ति जाणाल, त्यातून गहनता मिळवाल आणि सहजयोगाचे कार्य कराल. तुम्हा सर्वांना त्यासाठी माझे आशिर्वाद आहेत याची खात्री बाळगा.